

किं → धूम के वैयक्तिक तादात्म्य की व्याख्या करें।

Ans → दार्शनिकों की यह मान्यता आमक है, कि "उन्हें आत्मा की प्रत्येक समय अनुभूति होती है, मैं जब-जब इस आत्मा को अनुभव करने के लिए अपनी भीतर जाह्राई में उतरता हूँ तब-तब किसी-न-किसी संस्कार या प्रत्यय संस्कार रह जाता हूँ, चूँकि मुझे आत्म का कोई संस्कार प्राप्त नहीं होता इसलिए मुझे आत्म का कोई विचार नहीं है।" धूम ने अपने ये विचार प्रस्तुत करके आत्मा को एक सरल, अविभाज्य, अपरिवर्तनशील, शाश्वत तथा नित्य तत्व के रूप में मानने से इनकार कर दिया तथा कहा कि जिसमें आत्मा कहता हूँ वह अब तक प्राप्त हुए प्रत्यक्षों की पीरली है, जो कि अनित्य तथा परिवर्तनशील है।

धूम के विपरीत दार्शनिकों ने यह समस्या उठाई कि यदि आत्म अनित्य तथा परिवर्तनशील प्रत्यक्षों की पीरली है, तो इन प्रत्यक्षों का आश्रय क्या है? साथ ही हमें वैयक्तिक अनन्यता कैसी होती है? धूम के अनुसार, प्रत्यक्षों का आश्रय की कोई आवश्यकता

नहीं है क्योंकि वे अपना स्वतंत्र अस्तित्व खोते हैं।
जहाँ तक वैयक्तिक अनन्यता की बात है,
तो यह एक कॉम्प्लेक्स विचार है जो संरक्षक
और प्रत्ययों के दानिद साहचर्य से उत्पन्न
होता है। प्रत्ययों का सादृश्य, समरूपता और
संस्कृतता इस वैयक्तिक अनन्यता के विचार
को उत्पन्न करती है, जिसमें हमें प्रत्ययों के
आन्तरिक विस्तार और सातत्य का ज्ञान
होता है। हूम के अनुसार, वैयक्तिक अनन्यता
की उत्पन्न करने में सादृश्य तथा कारण-कार्य
सम्बन्ध का विशेष हाथ होता है। हमारे किन्
प्रत्ययों में सादृश्य है, यह खोज स्मृति हमारे
विभिन्न प्रत्ययों के कारण-कार्य सम्बन्ध बताकर
करती है इसीलिए हूम स्मृति की वैयक्तिक
अनन्यता का आचार मानते हैं।

अतः उपरोक्त विवरण से स्पष्ट
है कि हूम सादृश्यता की आचार बनाकर वैयक्तिक
अनन्यता की व्याख्या करती है। इस लेंकर
दाशिनिकों की समस्या है, क्योंकि हूम यह
नहीं बताते कि इस सादृश्यता का अनुभव
आखिर किसे होता है? क्योंकि एक प्रत्यय
दूसरे से स्वयं सादृश्यता का अनुभव नहीं कर

सकता। अतः अवश्य ही हमारे भीतर
कोई ऐसा तत्व होना चाहिए, जिससे यह
सादृश्यता अनुभव होती है। यह तत्व ही
तो आत्म है, जो कि नियंत्रण तथा अपरिवर्तन-
शील है, क्योंकि वही स्वीकार किए बिना
न तो वैयक्तिक अनन्यता की व्याख्या
संभव है और न ही स्मृति की, क्योंकि
यह स्वतंत्र नहीं रह सकती। अतः इसके अधिष्ठान
के रूप में नियंत्रण तथा अपरिवर्तनशील आत्म
की स्वीकार करना आवश्यक है।